जीवन के सात फेरे

साध्वी-युगल निधि-कृपा

बिखरते जीवन मूल्य, टूटते परिवार
एवं ढ़हती हुई नैतिकता को
पायेदार बनाने के लिए
परोपकार के मोड़ से गुज़ारकर
परमात्मा की दहलीज तक पहुँचाने वाले
शुद्ध ज़िन्दगी के सिद्धहस्त फार्मूले

जीवन के सात फेरे

प्रस्तुति

साध्वी युगल निधि-कृपा

E-mail : info@sadhviyugal
Website : www.sadhviyugal.com

क्रमांकन

★ नव्य शोध : अनूठा बोध iv
★ अन्तश्चेतना vi
★ आन्तरिक सराहना ix
★ जीवन के सात फेरे 1
★ गृहस्थ आश्रम 4

पहला फेरा : परिणय

★ परिणय का सच 9
1. परिणय की सितार 10
2. परिणय में चयन 15
3. मंगल परिणय के सात चरण 21
4. परिणय की बुनियाद 28
5. परिणय की प्रयोगशाला 35

दूसरा फेरा : परिवार

★ परिवार का सच 43
1. माता पिता की छाँव 44
2. माता-पिता का ऋण 51
3. माता-पिता से नजदीकी 58
4. संयुक्त परिवार की बाँसुरी 63
5. माली से मुनि तक माता-पिता 70

तीसरा फेरा : पैसा

★ पैसे का सच 79
1. जीवन का ऑक्सिजन 80
2. पैसा मार्ग है मंजिल नहीं 87
3. पैसा नंबर वन 94
4. पैसा आपकी हथेली में 101
5. मंदी में मुस्कान 107

चौथा फेरा : परिजन

★ परिजन का सच 113
1. परिजनों से मेल-मिलाप 114
2. सहयोग का सेतु 119
3. अतिथि का आदर 124
4. मित्रता का मकरंद 130
5. धन्यवाद की बौछार 135

पाँचवां फेरा : प्रतिष्ठा

★ प्रतिष्ठा का सच 141
1. प्रतिष्ठा का मधुबिन्दु 142
2. विनम्रता के आईने में प्रतिष्ठा 148
3. गुणों की सीप में प्रतिष्ठा 153
4. मधुरता की मंजूषा में प्रतिष्ठा 158
5. प्रतिष्ठा का चमचमाता पारा 163

छठा फेरा : परोपकार

★	परोपकार का सच	169
1.	परोपकार का पीयूष	170
2.	इन्सानियत की इबादत	176
3.	जीवन के कागज पर सेवा का हस्ताक्षर	181
4.	जीवन की रिज़र्व बैंक	186
5.	करुणा का किसलय	192

सातवाँ फेरा : परमात्मा

★	परमात्मा का सच	199
1.	भक्ति का आलम	200
2.	सत्संग का चेनल	206
3.	सद्गुरु का माइलस्टोन	211
4.	धर्मश्रवण का शंखनाद	217
5.	अन्तर्मुखी सदा सुखी	222

नव्य शोध : अनूठा बोध

जीवन के अनेक रंग हैं, इसे सिर्फ काले और सफेद रंग में विभाजित नहीं किया जा सकता। जिन्दगी में नीला, पीला, लाल, हरा, गुलाबी, बैंगनी, नारंगी जैसे अनेक रंग भी होते हैं। इसलिए मानवीय जीवन सप्तरंगी वलयों का विलक्षण इन्द्रधनुष है।

'विवाह के सात फेरे' से भारतीय संस्कृति का हर इन्सान परिचित है किन्तु 'जीवन के सात फेरे' की नव्य शोध साध्वी युगल निधि-कृपा श्री जी के पारदर्शी चिन्तन और निखरती शैली का परिणाम और प्रमाण है।

'परिणय' से प्रारंभ होनेवाली गृहस्थ जीवन की फेरी अंततः 'परमात्मा' के फेरे में कैसे प्रवेश ले सकती है यह बताकर साध्वी युगल ने सद्गृहस्थ बनने की चाबी हमें थमा दी है।

हालाँकि आज बढ़ती भौतिक प्रतिस्पर्धा में अच्छा जीवन जीना महज एक पहेली लगता है लेकिन यथार्थता यह है कि इस वैज्ञानिक युग में भी साध्वी युगल निधि-कृपा श्री जी की सृजन शैली जिन्दगी को आकार देने में सक्षम है।

इक्कीसवीं सदी में जीवन जीनेवाली पीढ़ी जीने के सलीकों से अनभिज्ञ है। इसलिए मात्र सुख-सुविधा, धन-दौलत, पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, मनमानी और मनोरंजन में गिरफ्त इन्सान सप्त 'प' कारों की फेरी का डायसेक्शन, डायरेक्शन और डयुरेशन समझ ले तो जन्म-मरण का महाफेरा भी समाप्त हो सकता है, यह अनूठा बोध इस नव्य शोध की देन है।

माना कि आज का युग समाधान का नहीं, समस्याओं के बोध का है। इसलिए बदलाव की प्रक्रिया कठिन हो सकती है पर असंभव नहीं।

जिन्दगी के हर फेरे का अनुसरण और अवलंबन सच्चाई का दामन थाम ले तो आपका जीवन अवश्य उत्थानकारी बनेगा। **'जीवन के सात फेरे'** में निहित सार बोध को उभारनेवाली कुछ पंक्तियाँ हैं -

पग पग पर सच्चा बोध दिलाती,
जन्म मरण की परंपरा घटाती।
समझशक्ति, सहनशक्ति, सद्‌बुद्धि,
सौम्यता, सुविख्याति, सहानुभूति।
सम्बोधि के सप्तरंग फैलानेवाली
मुक्ति का बिगुल बजानेवाली
'जीवन के सात फेरे' बनेगी,
नई पीढ़ी की सच्ची थाती॥

मैत्री चैरिटेबल फाउन्डेशन
दिल्ली

अन्तश्चेतना

जीवन का सफर बहुत ही रोमांचक और विविधतापूर्ण है। अगणित जन्मों की सुदीर्घ यात्रा में प्रत्येक मनुष्य ने आनन्द और खुशी की मंजिल तक पहुँचने के लिए रोज नये सिरे से कोशिशें की हैं। साल के बाद साल गुजरते गए किन्तु यह खोज अनवरत जारी है। ऐसे सौभाग्यशाली बहुत कम हैं जो इस मंजिल तक पहुँचने में कामयाब हो पाते हैं।

एक बात तय है, ज़िन्दगी में ज़िन्दगी से बढ़कर कोई मूल्यवान चीज नहीं है। नरक से स्वर्ग तक के सारे ताने-बाने ज़िन्दगी से ही जुड़े हैं। इसी कारण आदमी दिन रात भटक रहा है। दिन में खुली आँख उसे भटकाती है तो रात में बन्द आँख सपने दिखलाती है। अन्ततः जिन्दगी दोहरेपन के दोराहे पर खड़ी हो जाती है। चूँकि मनुष्य पाप की नींव पर पुण्य का महल खड़ा करना चाहता है। वह यह भूल जाता है कि कंगूरा कितना ही आलीशान क्यों न हो, अगर नींव गलत है तो खतरा बना ही रहेगा।

जीवन में सच्चा आनन्द पाने के लिए और सफल व सार्थक जीवन की अन्दरुनी व्यवस्था को आकार देने के लिए प्रस्तुत 'जीवन के सात फेरे' प्रूफ रीडिंग की भूमिका अदा करते हैं। इसलिए यह महज पुस्तक नहीं, फाउन्डेशन ऑफ लाइफ भी है जो जीने की असली बुनियाद को ठोस बनाती है।

जिनका प्रवेश अभी इन 'फेरों' में हुआ नहीं है उनके लिए यह एक 'चेतावनी' का प्रारूप है एवं जो इन 'फेरों' से गुजर रहे हैं उनके लिए यह पुरजोर 'सिखावनी' का परामर्श है।

कुल मिलाकर '**जीवन के सात फेरे**' आपकी जिन्दगी में दोतरफा औषधि के समान असर दिखाने की काबिलियत लिये हुए है। प्रायः औषधियाँ दो प्रकार की होती हैं। एक औषधि संभावित रोगों को रोकती है तो दूसरी औषधि रोग उभरने पर उसे मिटाने के लिए ली जाती है। एक प्रौफ:लैक्टिक (Prophylactic) है तो दूसरी थैरॅप्यूटिक (Therapeutic) है अर्थात् एक संरक्षक है तो एक संहारक है, शरीर के लिए दोनों की जरुरत है।

ज़िन्दगी के प्रवास में कहीं दिशाभूल हो जाए अथवा फिसलन व भटकन से कदम भ्रमित हो जाए तो सच्चाई के बोध से वाकिफ़ कराने वाली सर्वोत्तम मार्गदर्शिका है, 'जीवन के सात फेरे'। ये सात फेरे जीवन के गगन में सतत फेरी लगाने वाले सप्त ग्रहों की भाँति हैं। शेष जितने भी फेरे हैं वे छाया ग्रह की तरह हैं।

पहला फेरा : परिणय

युवावस्था की चौखट पर आकर्षण के झूले में झुलानेवाले परिणय के सात फेरे जब विकर्षण की जटिलता में उलझ जाते है तब समझशक्ति और सहनशक्ति का स्पर्श कराने हेतु '**परिणय**' की प्रयोगशाला का पारायण करना लाज़मी है।

दूसरा फेरा : परिवार

परिवार की कामधेनु आपके जीवन आँगन में सुख, सन्तुष्टि और शान्ति का अमृत प्रदान कर सकती है। अत: माली से मुनि तक का उपक्रम जानने हेतु '**परिवार**' के फेरे का सत्य जानना अनिवार्य है।

तीसरा फेरा : पैसा

आपकी बुनियादी जरूरत कहीं बर्बादी का बिगुल न बजा दे ... जो जिन्दगी का प्राण है वह कहीं जानलेवा न बन जाए और पैसा 'नंबर वन' आपकी हथेली में सदैव बना रहे, इसके लिए '**पैसे**' के फेरे पर गौर करना जरूरी है।

चौथा फेरा : परिजन

उम्र के इस मोहक पड़ाव पर परिजनों का संग दलदल न बन कर कमल बने एवं मित्रता के मकरंद से जीवन खुशहाल रहे, इसके लिए '**परिजन**' के फेरे का अवलोकन करना अपरिहार्य है।

पाँचवा फेरा : प्रतिष्ठा

जीवन के समुन्दर में ख्याति का मोती सदैव जगमगाता रखने के लिए '**प्रतिष्ठा**' के फेरे का निरीक्षण और परीक्षण करना अत्यावश्यक है।

फेरा पैसे का हो या परिणय का,
घेरा परिवार का हो या परिजन का,
परिक्रमा प्रतिष्ठा की हो या परोपकार की,
ज़िन्दगी के हर मोड़ पर सच हस्तगत हो।
ताकि
फेरा फिरकी न बने,
घेरा घुटन न बने,
परिक्रमा प्रतिबन्धक न बने,
परमात्म-भक्ति पाखंड न बने।
प्रत्येक फेरे के फर्ज का दायरा नापने
एवं सच्चाई के सन्निकट रहने हेतु
पुरजोर सिखावनी देने वाले
'जीवन के सात फेरे'।

नन्दिता-सुशील जैन
दिल्ली

Friendship makes soul divine
MAITRI CHARITABLE FOUNDATION
www.sadhviyugal.com

Self Help

Price: Rs 200

ISBN: 978-93-80727-08-0
9 789380 727080